10. धर्म के लिए साहस पूर्ण बलिदान

भाई मतीदास और भाई सतीदास जी

मोहयाल कई शताब्दियों से सिंध नदी से सतलुज नदी के बीच के ऊपरी क्षेत्र में बसे हुए थे. अफ़ग़ानिस्तान से भारत आने का मुख्य मार्ग भी वहां से गुज़रता था और दोनों देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के काफिले भी इसी मार्ग से जाते थे. पंजाब में पर्वत से निकाले गए नमक की भी व्यापार में विशेष भूमिका थी. पंजाब और काबुल के वैद और दत्त राजे व्यापार पर करारोपण से लाभान्वित होते ही थे पर इस क्षेत्र की जनता भी व्यापार संबंधित कार्यों से खुशहाल रहती होगी.

जब भारत के अधिकाँश भाग पर मुस्लिम राज हो गया तो तुर्क, अफ़ग़ान और मंगोल आक्रमणकारी भी इस मार्ग से लूट-मार के लिए आने लगे. हर बार वहां की जनता उत्पीड़ित होती थी. बाबर के आक्रमण तक भारत पर 70 आक्रमण हो चुके थे. इस निरंतर नरसंहार और विनाश से बचने के लिए, सिंध के अंतिम राजा डाहर का एक वंशज, राजा थारपाल छिब्बर, एक सुरक्षित स्थान की खोज में था. पंजाब की "नमक पर्वत श्रृंखला" में, "गम्भीर" नदी के किनारे "गढ़ थारचक" के नाम से उसने एक दुर्ग बना लिया.

1519 ई में, जब बाबर भेरा पर अपने आक्रमण से लौट रहा था, तो उसने खोखर जाति के सब ठिकानों का विनाश करने का प्रयत्न किया. उस संघर्ष में थरपाल छिब्बर का बेटा गौतम लड़ते हुए मारा गया और गढ़ थारचक भी ध्वस्त हो गया. गौतम का एक बेटा परागदास उस समय 12 वर्ष का था. परागदास अध्यात्मिक वृति का था. कई वर्ष हिमालय में घूमने और तपस्या के पश्चात उसका साक्षात्कार कश्मीर में गुरु नानकदेव से हुआ जिन्होंने उसे नानकपंथ की दीक्षा दी. गुरूजी ने उसकी युवा आयु को देखते हुए उसे सन्यास के बजाय गृहस्थ में रह कर समाज सेवा का उपदेश दिया. तब से वह बाबा परागा कहलाने लगे. अपने वंश के स्थान थारचक आकर उसके समीप एक उपयुक्त स्थान पर एक गाँव बसाया जो "करयाला" के नाम से जाना जाता है. बाबा परागा का विवाह (कैंबलपुर के समीप स्थित) "सारंग दुर्ग" के दीवान ताराचंद वैद की बेटी से हुआ.

बाबा परागा की बहुत लम्बी आयु थी. वह और उनका भाई "पेड़ा छिब्बर", तथा उन दोनों के कई वंशज, सिख गुरुओं के निकट सहयोगी रहे. गुरुओं के आदेश पर उन्होंने युद्धों में भी भाग लिया.

मुगल सम्राट अकबर के उत्तराधिकारी अधिक कट्टरपंथी और क्रूर थे. हिन्दू और सिख जनता पर उनके अत्याचार बढ़ने लगे. 1606-07 ई में जहांगीर की आज्ञा से पांचवें सिख गुरु अर्जुनदेव को बहुत यातनायें देकर मार दिया गया. इस का वर्णन जहांगीर ने अपनी आत्मकथा में किया है. छटे गुरु हरगोविन्द के आह्वान पर, वृद्ध आयु में, बाबा परागा ने मुग़ल सेना से दो युद्ध किये. दुसरे युद्ध में वह बहुत घायल हो गए और वापसी पर करयाला में उनका देहांत हो गया. उनके बेटे द्वारकादास (या

दुर्गादास) को गुरु हरगोबिंद का दीवान नियुक्त किया गया. सातवें और आठवें गुरु के संग भी दीवान के पद पर रहा. नवें गुरु तेगबहादुर के समय वृद्धायू के कारण उसने निवृति ली और उसके भतीजे भाई मतीदास और भाई सतीदास दीवान नियुक्त किये गए.

नवें गुरु तेगबहादुर (1664-75) के समय तक हालात बहुत बिगड़ चुके थे. औरंगज़ेब ने प्रदेशों के सूबेदारों को लिखित आदेश भेजे थे कि वह मन्दिर और मूर्तियों को तोड़ कर हिन्दुओं को धर्मांतरण के लिये मजबूर करें. वह भारत में "दारुल-इस्लाम" और "शरीयत" (इस्लामी क़ानून) चाहता था. गुरु तेगबहादुर धर्म की रक्षा के लिए किसी भी बलिदान के लिए तैयार थे. उनको पकड़कर दिल्ली लाया गया. भाई मतीदास, सतीदास छिब्बर और दयालदास उनके संग थे. (*भट्ट वही मुलतानी सिंधी*)

कई प्रकार के प्रलोभन और धमकियां देने पर भी उन्होंने अपना धर्म त्याग कर मुस्लिम बनने से इनकार कर दिया. उनके मनोबल को तोड़ने के लिए उनको कई यातनायें दी गईं. मतीदास छिब्बर को दो लकड़ी के तख्तों के बीच बांध कर आरे से उसके शरीर के दो टुकड़े कर दिए गए. उसने बड़े धैर्य और शान्ति के साथ इसको सहन किया. उसके भाई सतीदास छिब्बर के शरीर पर रूई बांधकर उसको ज़िंदा जला दिया गया. द्यालदास को जीवित उबलते तेल में डाल दिया गया. इन सब यात्नाओं को उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया पर अपने धर्म से विमुख नहीं हुए. दिल्ली के चांदनीचौक में गुरु तेगबहादुर को भी शहीद कर दिया गया. धर्म की रक्षा के लिए इन शहीदों का बलिदान विश्व के इतिहास में अद्भुत धर्म निष्ठा और वीरता का अद्वतीय उदहारण है.

जब गुरु गोविन्द सिंह जी सिख पंथ के दसवें गुरू बने तो उन्होंने भाई मतीदास और भाई सतीदास जी के वंश के साहबचन्द, धर्मचन्द और मुकंद राय को "दीवानी" के पदों पर नियुक्त किया. यह छिब्बर ब्राह्मण भी अपनी वंशगत परम्परा के अनुसार देश हित में गुरु जी के लिए शहीद हुए. साहबचन्द/सिंह ब्यास नदी के पास मुग़लों से युद्ध करते हुए शहीद हो गया. *"जीत भई खालसा की, और साहब चन्द की लोथ उठाई"*. गुरू गोविन्द सिंह को इसका बहुत शोक हुआ और उन्होंने अपने हाथों से उसकी चिता जलाई. बाद में भाई मतीदास का बेटा मुकंद राय और कश्मीर के कृपा राम/सिंह दत्त चमकौर के युद्ध में शहीद हो गये. गोविन्द सिंह जी के दो बेटे - अजीत सिंह और जुझर सिंह - भी इसी युद्ध में लड़ते हुए मारे गए. गुरू जी वहां से बच कर निकलने में सफल रहे .

देश के लिए मोहयालों द्वारा बलिदान की यह श्रृंखला यहां समाप्त नहीं हो गई. उन की गौरव गाथा हम जारी रखेंगे.